संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2083 | वर्ष : 2026

हिन्दी पाक्षिक

अंक : मार्च (द्वितीय)

भारतीय नव वर्ष

विकल्प बना मक्को

मक्को, जिसे शहरों में 'रसभरी' के नाम से जाना जाता है, इन दिनों बाजार में खासा आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इसे चिरपोटी, बंभुतका, मकोय और अंग्रेजी में Cape Gooseberry भी कहा जाता है। आयुर्वेद में एक अद्‌भुत औषधीय फल माना जाता है। यह न सिर्फ स्वाद में मीठा–खट्टा है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बहुप्रभावी है। रसभरी के बीज और पत्ते भी आयुर्वेद में औषधीय उपयोग के लिए प्रसिद्ध हैं।

रसभरी विटामिन A,C, एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर का अच्छा स्रोत है। यह आँखों की रोशनी बढ़ाने, मधुमेह नियंत्रण, पाचन में सुधार और हृदय स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। यह वजन घटाने और बवासीर में भी राहत दे सकती है। हालांकि, इसके अत्यधिक सेवन से पेट दर्द या एलर्जी हो सकती है। इसलिए सीमित मात्रा में खाना बेहतर है।

खेती कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञ डॉ. उमेश नारायण उमेश के अनुसार अब इसकी खेती किसानों के लिए लाभप्रद बन रही है। मक्को की खेती सितंबर–अक्टूबर में शुरू होती है और फरवरी–मार्च तक यह फल बाजार में उपलब्ध रहता है। यह 3–4 महीने की फसल है, जो कम समय में अच्छी आमदनी देने के लिए जानी जाती है। डॉ. उमेश के अनुसार, इसकी खेती में प्रति बीघा करीब 40 से 50 हजार रुपये की लागत आती है, जबकि शुद्ध आय 1 से 1.5 लाख रुपये तक हो सकती है। एक बीघा जमीन से 200 से 250 किलो या उससे अधिक उत्पादन संभव है। बेहतर मुनाफा मिलने के कारण यह किसानों के लिए लाभकारी विकल्प बनता जा रहा है। इसकी खेती से 1 से 1.5 लाख रुपये तक आय हो सकती है। एक बीघा जमीन से 200 से 250 किलो या उससे अधिक उत्पादन संभव है। बेहतर मुनाफा मिलने के कारण यह किसानों के लिए लाभकारी विकल्प बनता जा रहा है।

कभी सब्जियों के लिए प्रसिद्ध नालंदा का एक अप्रत्याशित केंद्र बनकर उभर रहा है। बिहार के नालंदा जिले के पांच गांवों – सिलाव प्रखण्ड के सब्बैत, रानी बीघा, रघु बीघा, नियमतपुर और जुआफर में यह फल समृद्धि की लहर ला रहा है। यहां के दर्जनों किसानों ने पारंपरिक फसलों को छोड़कर इस उच्च मूल्य वाली फसल की खेती शुरू कर दी है। अब व्यापारी इसे कोलकाता, हैदराबाद, दिल्ली और खाड़ी के देशों तक ले जाते हैं।

शहरों में मक्को 100 से 150 रुपये प्रति किलो तक बिकता है, जबकि ग्रामीण बाजारों में इसकी कीमत 80 से 100 रुपये प्रति किलो रहती है। मौसम के अंतिम दिनों में इसकी कीमत दोगुनी तक हो जाती है, जिससे किसानों को अतिरिक्त लाभ मिलता है।

डायबिटीज मरीजों के लिए भी उपयोगी रसभरी का लो–ग्लाइसेमिक इंडेक्स ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में मदद करता है, जिससे यह मधुमेह रोगियों के लिए भी लाभकारी है। कम कैलोरी और अधिक फाइबर के कारण यह लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस कराता है, जिससे वजन नियंत्रण में रहता है। इसके अलावा, इसमें मौजूद विटामिन ए और एंटीऑक्सीडेंट आंखों की रोशनी बढ़ाने और त्वचा को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण शरीर में सूजन को कम करने में सहायक होते हैं। कुल मिलाकर, मक्को न सिर्फ किसानों के लिए मुनाफे का सौदा साबित हो रहा है, बल्कि स्वास्थ्य के लिहाज से भी यह एक बेहद उपयोगी फल है, जिसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी .... ----
बोध कथा 02
भारतीय नव वर्ष..03
प्रतिनिधि सभा..06
संघ शताब्दी वर्ष और बिहार..07
गांव घर..09
अपनी हिन्दी..12
सिनेमा..13
स्वास्थ्य..15
आंदोलन..16
अनुकरणीय.. ----

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।

आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।

शेष शुभ!

बैल और गधा

एक समय की बात है। काशी में कई वर्ष साथ रहकर दो पंडितों ने धर्म और शास्त्रों का अध्ययन किया। शिक्षा पूरी होने के बाद दोनों विद्वान अपने–अपने गांव की ओर चल पड़े। तब यातायात के साधन तो थे नहीं, लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कई–कई दिन लग जाते थे। लोग दिन में चलते थे और रात में विश्राम करते थे। ये दोनों पंडित भी ऐसा ही कर रहे थे।

एक बार दोनों नगर के सबसे धनी व्यक्ति के यहां ठहरे। उसने उनके रहने की व्यवस्था की और फिर अपने लोगों से कहा कि दोनों महानुभावों के भोजन का भी बंदोबस्त किया जाए। इस बीच, समय पाकर धनी व्यक्ति दोनों के पास पहुंचा और उनसे चर्चा करने लगा। धनी व्यक्ति अनुभवी था। वह जान गया कि दोनों पंडितों में बहुत ज्यादा घमंड है, साथ ही दोनों एक–दूसरे को मूर्ख समझते हैं। उन्होंने दोनों से अलग–अलग बात कर एक दूसरे के बारे में भी पूछा। जो जवाब मिला, वह धनी व्यक्ति को दुखी कर गया। उसने मन में विचार किया कि ये दोनों काशी जैसी जगह पर वर्षों अध्ययन करके आए हैं, लेकिन एक–दूसरे का सम्मान करना नहीं सीखा। बहरहाल, भोजन का समय हो गया था। धनी व्यक्ति ने दोनों को बड़े आदरपूर्वक भोजन कक्ष में बुलाया। एक की थाली में चारा और दूसरे की थाली में भूसा परोसा। यह देखकर दोनों पंडित आगबबूला हो गए। गुस्से में आकर कहने लगे कि क्या हम जानवर हैं जो यह चारा और भूसा खाएंगे? धनी होकर तुम हमारा अपमान कर रहे हो। यह लक्ष्मी द्वारा सरस्वती का अपमान है! इस पर उन्होंने बड़ी ही शांति से जवाब दिया– एक को थाली में चारा और दूसरे को भूसा परोसा गया है, इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। जब मैंने आपमें से एक से दूसरे के बारे में पूछा था तो उसने कहा था कि वह तो बैल है। वहीं दूसरे से पहले के बारे में पूछा था तो उसने कहा था कि वह गधा है। आप दोनों ने ही एक दूसरे को बैल और गधा बताया, तो मैंने उसी हिसाब से चारा और भूसा थाली में परोस दिया। इतना सुनते ही दोनों ज्ञानियों की आंखें खुल चुकी थीं। उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया था। उन्होंने उनसे क्षमा मांगी, एक–दूसरे के प्रति ऐसी सोच रखने के लिए खेद भी जताया।

सीख – व्यक्ति में कितना भी ज्ञान आ जाए, उसे घमंड नहीं करना चाहिए। साथ ही दूसरों के प्रति बुरे भाव नहीं रखने चाहिए।

वर्ष प्रतिपदा

— हजारी प्रसाद द्विवेदी

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नया साल शुरू होता है। इस दिन पत्रा बदला। नए वर्ष के राजा और मंत्री बदले। धान्य और मेघ के अधिपति बदले। श्रद्धालु लोगों ने ज्योतिषियों से इन नए परिवर्तनों का फल सुना।

धार्मिक लोगों ने तेल–उबटन लगाकर परलोक की चिंता से छुट्टी पाई और महाराज विक्रमादित्य के महिमा मंडित नाम के साथ जुड़ा हुआ संवत्सर 2004 डग भरकर अग्रसर हुआ। बहुत लोग नहीं जानते कि इस तिथि को ये सब बातें क्यों बदल जाती हैं। क्या इसका कोई इतिहास है, कोई अनुभूति है, कुछ अर्थ है या केवल पोंगापंथियों की एक कपोल कल्पना मात्र है? नीचे इसका उत्तर देने का प्रयत्न किया जा रहा है।

आज के दुविधा भरे युग में इस संवाद से संतोष अनुभव किया जाएगा कि उत्तर भारत के नए वर्ष के साथ उत्तर भारत के पत्रों में जो परिवर्तन होते बताए जाते हैं, वे नाना आर्य और आर्येतर विश्वासों के समन्वय के परिणाम हैं। शकों, यवनों (ग्रीकों) और आर्यों के राजनीतिक संघर्ष बड़े कठोर हुए थे, परंतु फिर भी ये जातियां भीतर–ही–भीतर मिलन की ओर बढ़ती रहीं। राजनीति के कठोर संघर्ष के आवरण में विश्वासों का यह समन्वय सचमुच बड़े आश्चर्य का विषय है। हमारा नया वर्ष हर साल आकर घोषणा कर जाता है कि स्वार्थी के संघर्ष क्षणिक हैं। इनके अंतर में मनुष्य अपने मिलन की भूमिका बिना किसी प्रयास के ही तैयार करता जा रहा है।

ज्योतिष की पुरानी पोथियो में लिखा है कि जिस दिन सृष्टि का चक्र प्रथम बार विधाता ने प्रवर्तित किया, उस दिन चैत्र शुदि रविवार था। शुदि 'शुक्ल दिवस' का संक्षिप्त रूप है। इसका मतलब शुक्ल पक्ष का दिन है। सो चैत्र के महीने के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि (प्रतिपद या प्रतिपदा) को सृष्टि का आरंभ हुआ था। यह विश्वास काफी पुराना है। ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी) और भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) के ग्रंथों में इसकी चर्चा है। ब्रह्मगुप्त काफी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनके ग्रंथों का अनुवाद अरबी भाषा में हुआ था। इस अनुवाद ने पश्चिमी देशों को नए सिरे से प्रभावित किया था। इनकी पुस्तकों में इस विश्वास के उल्लेख से जान पड़ता है कि कम–से–कम डेढ़ हजार वर्ष पहले से चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वर्षारंभ की तिथि है, लेकिन ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य ने यह भी लिखा है कि उस दिन रविवार था।

अपने देश के पंडितों में इस विषय को लेकर बड़ा शास्त्रार्थ हुआ है कि वार–प्रथा भारतवर्ष में कितनी पुरानी है। बहुत पुरानी तो नहीं है। इसका सबसे पुराना उल्लेख कच्छ राज्य के अंधों गांव में मिले हुए शक क्षत्रप रुद्रदामनकालीन एक लेख में मिला है। यह 5.2 शक संवत् (130 ई.) का है। इसमें स्पष्ट रूप में 'गुरुवार' शब्द का उल्लेख है। हाल कवि की 'गाथा सप्तशती' में भी अंगारवार (मंगलवार) का उल्लेख है। कहते हैं, हाल सुप्रसिद्ध सातवाहन राजा का ही नामान्तर है। इसका सम्बंध भी ईस्वी सन् की दूसरी शताब्दी में माना जाता है। इस प्रकार वार–प्रथा का पुराने–से–पुराना उल्लेख ईस्वी सन् की दूसरी शताब्दी का है, इसलिए जब यह कहां जाता है कि विधाता ने सृष्टि का प्रथम प्रवर्तन रविवार को किया था, तो इस विश्वास का मूल बहुत पुराना नहीं हो सकता। ईस्वी सन् के बाद का ही हो सकता है।

ईसाई हो या यहूदी, हिंदू हो या मुसलमान, सभी एक–एक दिन को करीब–करीब एकार्थक नामों से ही पुकारते हैं। हमारे जीवन में ये कितने सहज भाव से घुल–मिल गए हैं और फिर कितने गंभीर रूप में हमें प्रभावित कर रहे हैं। प्रत्येक धर्म में इन दिनों के साथ व्रत, पूजा और शुभाशुभ फल जुड़े हुए हैं। क्या यह आश्चर्यजनक शुभ संवाद नहीं है कि परस्पर विरोधी समझी जानेवाली संस्कृतियां और परंपराएं इस विषय में विचित्र भाव से एक हैं, लेकिन मनुष्य की संस्कृतियां परस्पर विरोधी नहीं होतीं। हम विचार करके देखें, तो इस प्रकार की अचरज भरी बातें थोड़ी नहीं हैं। हमारा नया वर्ष हमें बहुत–सी बातों को सोचने–समझने को मजबूर करता है।

वर्ष का राजा कौन ग्रह होता है? 'ज्योतिष फलोदय' नामक एक पुराने ग्रंथ में कहा गया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जिस ग्रह का वार होगा, वही उस वर्ष का राजा होगा और मेष राशि में संक्रांति होने के दिन जिस ग्रह का वार होगा, वह मंत्री होगा। बहुत पुराने जमाने से हिंदुस्तान के लोग नौ ग्रह मानते आए हैं। सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। इनमें सात के नाम पर तो वार हैं, पर राहु और केतु के नाम पर नहीं। क्यों नहीं है? और ये बेचारे क्या राजा और मंत्री होंगे ही नहीं?

एक बात इस प्रसंग में बड़ी मजेदार है। यहूदी लोगों से अपने को पृथक करने के लिए ईसाई लोगों ने रविवार को सप्ताह का आदि–दिन घोषित किया था। धीरे–धीरे सारे संसार में रविवार का प्राधान्य घोषित हो गया। भारतवर्ष में जो रविवार के दिन सृष्टि–प्रवर्तन करने का विश्वास है, इसका कारण यह है कि इस देश में सूर्य को बराबर प्रधान ग्रह मानते आए हैं, लेकिन जब मुझे अपने नव वर्ष की याद आती है, तो यह विचित्र समानता स्मरण हुए बिना नहीं रहती कि हमारे पूर्वजों की ही भांति ईसाई लोगों के आदिनेताओं ने भी रविवार को बहुमान दिया था।

इस प्रसंग में एक बात और याद आ रही है। विक्रम संवत् प्रायः सारे भारतवर्ष में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही नहीं आरंभ होता। विक्रम संवत् का

मूल नाम मालव–संवत् था। मालव में यह संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होता है। दक्षिण भारत में भी यह संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से ही शुरू होता है। केवल उत्तर भारत में यह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ हुआ माना जाता है। वैसे तो शिलालेखों में चैत्रादि और कार्तिकादि, दोनों प्रकार के संवतों का उल्लेख है, परंतु शताब्दी तक के शिलालेखों में साधारणतः कार्तिक 12वीं शुक्ल प्रतिपदा से ही संवत् का आरंभ माना जाता था।

चैत्रादि संवत् का प्रचार इसके बाद ही हुआ है। वस्तुतः चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शक संवत् का आरंभ बहुत प्राचीन काल से ही होता आया था। बाद में उत्तर भारत में पंचागों और अन्य व्यावहारिक कृत्यों में जब दोनों संवतों का प्रयोग होने लगा, तो सुभीते के लिए दोनों का आरंभ एक ही तिथि से माना जाने लगा। शक वर्ष किसी शकराजा का चलाया हुआ है। उन लोगों ने चैत्रादि संवत् का प्रवर्तन किया था। यह शायद इस देश की फसलों को ध्यान में रखकर किया गया था। गुप्तों का गुप्त संवत् भी चैत्र से ही आरंभ होता था और आगे चलकर मुसलमान बादशाहों ने भी जो नया सन् चलाया, वह चैत्र के आसपास ही आरंभ होता है। वस्तुतः इस देश के लिए वसंतादि संवत्

ज्यादा व्यावहारिक है।

मेष राशि में जिस दिन सूर्य का प्रवेश होता है, उस दिन सौर वर्ष आरंभ होता है। उसी दिन को मेष संक्रांति का दिन कहते हैं। इस दिन जिस ग्रह का वार होता है, वह मंत्री होता है। विशुद्ध ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाए, तो यही तिथि वास्तविक वर्षारंभ की तिथि कही जानी चाहिए, परंतु नाना कारणों से प्राचीन काल में इस तिथि से मुख्य वर्ष का आरंभ नहीं माना गया है। फिर भी इसे गौण वर्ष की आरंभ तिथि तो मानते ही थे। यही कारण है कि इस तिथि के वारवाले ग्रह को मंत्री का पद दिया गया है। असल में पुराने भारतवासी व्रत–उपवास को प्रधान मानकर वर्ष की प्रधानता मानते थे। व्यावहारिक सुभीते के लिए या विशुद्ध ज्योतिषीय मत से आरंभ होनेवाले संवत् को वह गौण ही समझते थे।

मुसलमान बादशाहों के जमाने में इस दिशा में एक और प्रयत्न हुआ। उन लोगों का हिजरी सन् विशुद्ध चंद्र वर्ष है। हिंदुओं के चंद्र वर्ष को अधिगाम में संशोधन करके सौर वर्ष के साथ सामंजस्य कर लेने की प्रथा है। मुसलमानी संवत् में वह सामंजस्य नहीं है, इसलिए मुसलमान बादशाहों ने इस देश में आकर अनुभव किया कि हिजरी सन् से इस देश की नियमित ऋतु व्यवस्था का कोई मेल नहीं है, इसलिए उन्होंने उस सन् को सौर वर्ष के साथ चलाकर एक बिल्कुल नए संवत् की नींव डाली, फसली सन् ऐसा ही सन् है। बाद में इस सन् को विशुद्ध ज्योतिष संवत् बना देने का प्रयत्न हुआ। बंगाल में प्रचलित बंगाब्द इसी प्रकार का संशोधन है। यह मेष संक्रांति के दूसरे दिन शुरू होता है। पंजाब में वर्ष मेष सक्रांति के दिन शुरू होता है। भारतवर्ष के अनेक भागों में यह सौर वर्ष मुख्य संवत् बन गया है।

सो, भारतवर्ष के इस राष्ट्रीय संवत् के साथ असुरों, यवनों, शकों और आर्यों की दीर्घ साधना से उपलब्ध ज्ञान की स्मृति जुड़ी हुई है। वह ईसाइयों और यहूदियों के सांस्कृतिक संघर्ष की याद दिला जाता है और प्रतिवर्ष ऊंचे गले से घोषणा कर जाता है कि मनुष्य ही महान है। उसकी कल्याण बुद्धि ही जगत के अत्यंत कठिन प्रश्नों का समाधान करती आ रही है। हमारा नया वर्ष हिंदुओं और मुसलमानों की सम्मिलित प्रतिभा की स्मृति भी जगा देता है और जो लोग दुविधा में पड़े हुए हैं, उन्हें आश्वासन दे जाता है कि ये विकट भृकुटियां ज्यादा दिन तक परेशान नहीं करेंगी, ये स्वार्थ–संधात क्षणिक हैं। कठोर संघर्ष के भीतर भी मनुष्य की मिलन भूमि तैयार होती रहती है। हमारा यह राष्ट्रीय त्योहार पुराने ऋषि की महिमामयी वाणी को याद दिला जाता है, ''मैं तुम सबको एक परम गोपनीय रहस्य (ब्रहा) बताता हूं– इस संसार में मनुष्य से श्रेष्ठ (ऊंचा) अन्य कुछ भी नहीं है।'' – गुह्यं ब्रह्य तदिदं वो ब्रवीमि, न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्।

(महाभारत, शांतिपर्व 299/20)

(साभारः हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली–9, राजकमल प्रकाशन से संपादित अंश)

संघ के विस्तार का अर्थ राष्ट्रीय विचार का विस्तार – मा. दत्तात्रेय जी

हरियाणा के समालखा स्थित माधव सृष्टि में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की 3 दिवसीय बैठक 15 मार्च को सम्पन्न हुई। यह बैठक संगठन कार्य में विस्तार, राष्ट्रहित में समाज की सज्जन शक्ति की अधिक सक्रियता और सामाजिक समरसता के संकल्प के साथ सम्पन्न हुई। बैठक के अंतिम दिन संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने पत्रकारों से संवाद में बताया कि गत वर्ष संगठन कार्य का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। संघ की शाखाएं लगभग छह हजार की वृद्धि के साथ 88 हजार से अधिक हो गई हैं। स्थान भी बढ़कर 55 हजार से अधिक हो गए हैं। इसके साथ ही साप्ताहिक मिलन और मंडली की संख्या भी बढ़ी है। अब संघ की शाखाएं अंडमान, अरुणाचल प्रदेश, लेह और दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में भी संचालित हो रही हैं। संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में भी इस सांगठनिक विस्तार को स्पष्टता से देखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि सांगठनिक विस्तार के साथ संघ समाज में गुणवत्ता संवर्धन के लिए भी निरंतर कार्य कर रहा है। पंच परिवर्तन के माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करना महत्वपूर्ण है। भारतीयता या हिन्दुत्व केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन शैली है और इसके माध्यम से समाज में गुणवत्ता का विस्तार होना चाहिए। इसी उद्देश्य से समाज की सज्जन शक्ति को एकत्र करना और इस शक्ति का राष्ट्रहित में प्रवृत्त होना आवश्यक है।

सरकार्यवाह जी ने कहा कि समाज में महापुरुषों के कार्यों को जाति, पंथ के भेद से ऊपर उठकर स्वीकार करना चाहिए और उनके माध्यम से समाज को सकारात्मक परिवर्तन के लिए आगे बढ़ना चाहिए। संघ के स्वयंसेवकों ने इसी दिशा में नवम गुरु श्री तेग बहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष के अवसर पर देशभर में 2 हजार से अधिक कार्यक्रम किए, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए। इसी प्रकार राष्ट्रगीत वंदेमातरम की 150 वर्षगांठ भी उत्साहपूर्वक मनाई गई। आगामी वर्ष में संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650वें प्राकट्य वर्ष पर कार्यक्रमों की योजना बनी है।

संघ के आगामी वर्ष के नियमित प्रशिक्षण वर्गों की जानकारी दी और बताया कि 11 क्षेत्र के वर्ग तथा एक नागपुर के वर्ग को मिलाकर कुल 96 प्रशिक्षण वर्ग संचालित किए जाएंगे। प्रतिनिधि सभा में गौ–सेवा और ग्राम–विकास की भी योजनाओं पर विचार किया गया है। नागरिकों को प्रेरित किया जाएगा कि वे घर की छत पर सब्जी उगाएं, उसमें देसी गोबर और गौमूत्र की खाद का उपयोग करें। जिससे गौ–संवर्धन में सभी सहयोग कर सकते हैं। इसी तरह हरित घर बनाने का भी संकल्प नागरिक ले सकते हैं, जिससे घर में पॉलीथीन का न्यूनतम उपयोग, जल संरक्षण आदि प्रयास किए जा सकते हैं।

संघ की संगठनात्मक संरचना में परिवर्तन संबंधित प्रश्न पर उन्होंने कहा कि संरचना में विकेन्द्रीकरण पर विचार हुआ है, जिसमें प्रांत के स्थान पर छोटी इकाई संभाग बनाने का प्रस्ताव है। जिसके लागू होने पर 46 प्रांतों के स्थान पर 80 से अधिक संभाग होंगे।

अंडमान, अरुणाचल सहित पूरे देश में संघ के लिए समाज में उत्साह

अंडमान में प्रमुख 9 द्वीपों से 13 हजार से अधिक लोग सरसंघचालक जी की उपस्थिति में हुए हिन्दू सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इसी प्रकार अरुणाचल प्रदेश जैसे कम जनसंख्या घनत्व वाले प्रदेश में भी 21 स्वधर्म सम्मेलनों में 37 हजार से अधिक लोगों ने सहभागिता की।

बिहार के 1 करोड़ घरों तक पहुंचा संघ

बिहार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष में 1 करोड़ घरों तक पहुंच गया है। इस बार व्यापक गृह संपर्क कार्यक्रम में संघ के स्वयंसेवकों ने 84 लाख घरों में संघ साहित्य और पत्रक देकर संवाद और संपर्क स्थापित किया गया। बिहार के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित हिंदू सम्मेलन में अब तक 10 लाख 41 हजार 324 नागरिक उपस्थित हो चुके हैं। हिंदू सम्मेलन का कार्यक्रम अभी जारी है। यह जानकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर–पूर्व क्षेत्र (बिहार–झारखंड) के क्षेत्र कार्यवाह डॉ. मोहन सिंह तथा दक्षिण बिहार प्रांत के संघचालक राजकुमार सिन्हा ने विश्व संवाद केंद्र में आयोजित पत्रकार वार्ता में दी।

उन्होंने समालखा (हरियाणा) में 13 से 15 मार्च तक आयोजित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के बैठक की जानकारी देते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में निरंतर विस्तार हो रहा है। देश में 55,683 स्थान पर 88,949 शाखाएं लग रही है। इस प्रकार गत एक वर्ष में 3943 नए स्थान जुड़े और शाखाओं की संख्या में 5820 की वृद्धि हुई है। अगर बिहार की बात की जाए तो उत्तर बिहार और दक्षिण बिहार में गत वर्ष 2308 दैनिक शाखाएं लगती थी। इस वर्ष उनकी संख्या बढ़कर 2575 हो गई है। इसी प्रकार साप्ताहिक मिलन की संख्या भी 850 से बढ़कर 1,076 तथा संघ मंडली की संख्या 272 से बढ़कर 356 हो गई है। इस प्रकार संघ का प्रत्यक्ष कार्य बिहार में 4 हजार 7 हो गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना का यह शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। शताब्दी वर्ष कार्यक्रमों का प्रारंभ 2 अक्टूबर, 2025 को नागपुर में हुआ। संघ शताब्दी वर्ष में दो प्रकार के कार्यक्रमों की योजना की गई थीय जिनमें एक संगठन विस्तार और दूसरा समाज की सज्जन शक्ति को सद्भाव व समरसता के लिए संगठित करने का उद्देश्य रखा गया। इस दृष्टि से व्यापक गृह संपर्क अभियान तथा हिन्दू सम्मेलन अभी पूरे देश में चल रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार 10 करोड़ घरों तथा 3 लाख 90 हजार गांवो तक संपर्क किया जा चुका है। इसी प्रकार देश भर में अभी तक 36,000 से अधिक स्थानों पर हिंदू सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है। इसमें शहरी, ग्रामीण और दुर्गम जनजातीय क्षेत्र सहित सभी प्रकार के स्थान सम्मिलित हैं। समाज हित के लिए सज्जन शक्ति को संगठित करने की दृष्टि से प्रमुख नागरिक संगोष्ठियां भी आयोजित की गई। इसी प्रकार सामाजिक नेतृत्व करने वाले लोगों की सामाजिक सद्भाव बैठक भी आयोजित की जा रही हैय दक्षिण बिहार के अपेक्षित 329 स्थानों में से 317 स्थानों पर यह बैठक आयोजित की जा चुकी हैय इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के भीतर पंच परिवर्तन के व्यापक लक्ष्य के लिए वातावरण बन रहा है। पंच परिवर्तन में सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण चेतना, स्व एवं स्वदेशी के लिए गर्व, परिवार व्यवस्था के संरक्षण तथा नागरिक कर्तव्यों के लिए जागरुकता को सम्मिलित किया गया है। इन परिवर्तनों के माध्यम से ही देश और समाज को महान बनाया जा सकता है। इन कार्यक्रमों में सामान्य लोगों ने मतान्तरण और ड्रग्स नियंत्रण की चर्चा की।

आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए क्षेत्र

कार्यवाह एवं प्रांत संघचालक ने बताया कि युवाओं को राष्ट्रीय विचार से जोड़ने के लिए व्यापक पैमाने पर युवाओं के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विमर्श स्थापित करने के लिए प्रमुख जनों की गोष्ठी भी आयोजित की जाएगी। संघ कार्य को गति देने के लिए तथा विभिन्न आयु वर्ग के लोगों को संघ से प्रत्यक्ष जोड़ने के लिए संघ व्यापक अभियान चलाएगा। इसमें तरुण, बाल और प्रौढ़ों की अलग–अलग शाखाएं अधिक स्थानों पर लगेय इसकी भी कार्य योजना बनाई जा रही है।

उन्होंने कहा कि जाति पंथ के भेद से ऊपर उठकर महापुरुषों का सम्मान एवं अनुकरण करने के लिए संघ के स्वयंसेवकों ने कई कार्यक्रम किए। इस दिशा में नवें गुरु गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान के 350वें वर्ष पर देशभर में 2000 से अधिक कार्यक्रम किए गए, जिनमें 7 लाख से अधिक लोग सम्मिलित हुए। इसी प्रकार राष्ट्रगीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ भी उत्साहपूर्वक मनाई गई। उन्होंने कहा कि आगामी वर्ष में संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650वें प्राकट्य वर्ष पर कार्यक्रमों की योजना बनी है। वर्त्तमान समय में जब विभाजनकारी शक्तियां समाज को वर्ग और जाति के आधार पर विभाजित करने का प्रयास कर रही हैं, तब संत रविदास जी के जीवन संदेश के मर्म को समझते हुए समाज की एकात्मता के लिए कार्य करने का संकल्प लेना आवश्यक हैद्य

प्रतिनिधि सभा की बैठक में बांग्लादेश की सरकार से अपेक्षा व्यक्त की गई कि वहां की नई सरकार हिन्दू हितों एवं मानवाधिकार की रक्षा करेगीद्य सभा ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि माओवादी हिंसा पर बहुत नियंत्रण हुआ हैद्य मणिपुर में नई सरकार बनने से वहां शांति स्थापित हुई हैद्य चट्टग्राम पर्वत शृंखला से सटा हुआ कारबुक विकास खंड जनजाति बहुल हैद्य गत वर्ष वहां 8 स्थानों पर रथ यात्रा का आयोजन हुआद्य वहां 25000 जनसंख्या में 8000 लोग एकत्रित हुएद्य यह हिन्दू संस्कृति के बढ़ते आवेग को दर्शाता हैद्य

पत्रकार वार्ता में दक्षिण बिहार प्रांत के प्रचार प्रमुख अभिषेक कुमार एवं सह प्रचार प्रमुख निखिल रंजन भी उपस्थित रहें ।

संत शिरोमणि सद्गुरु श्री रविदास जी का 650वां प्राकट्य वर्ष

''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संत शिरोमणि के 650वें प्राकट्य वर्ष के अवसर पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता है। आपका कर्मशील जीवन और कार्य हम सबके लिए प्रेरणास्रोत है। आपने जन्म के आधार पर ऊंच–नीच के भेद को नकारते हुए आचरण को ही श्रेष्ठता की कसौटी माना। रूढ़ियों और कुरीतियों से समाज की मुक्ति तथा कालबाह्य परंपराओं को त्यागने और काल सुसंगत सामाजिक परिवर्तनों को अंगीकार करने हेतु समाज का मानस बनाने में उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही है। उनके विचारों का महत्व समझकर श्री गुरुग्रंथ साहिब में उनकी 41 वाणियों को 'शबद' रूप में समाहित किया गया है।

सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने वाले संत श्री रविदास जी का ईश्वर–भक्ति, सेवा भाव तथा समाज के प्रति निश्छल प्रेम के कारण काशी के विद्वत्–जनों सहित समाज के सभी वर्गों ने उनकी महानता को स्वीकृत किया। काशी नरेश, झाली रानी तथा मीराबाई जैसे राजपरिवारों के सदस्यों ने भी उनको अपना गुरु माना । गुरु और शिष्य के रूप में संत श्री रविदास जी और मीराबाई का नाता निर्गुण और सगुण भक्ति धाराओं का मिलन है तथा जातिभेद मानने वालों के लिए अनुकरणीय सीख भी है।

मुस्लिम आक्रमणकारियों के आतंक के उस कठिन काल में भक्ति की निर्मल धारा को प्रवाहित करते हुए संत श्री रविदास जी ने धर्म की श्रेष्ठता की उद्घोषणा की और लोगों से धर्मपालन का आग्रह किया। सद्गुरु संत श्री रविदास जी को मतांतरित कर मुस्लिम बनाने के अनेक प्रयास हुए, किन्तु उनकी भक्ति और आध्यात्मिक साधना से प्रभावित होकर उन्हें मतांतरित करने वाले ही उनके अनुयायी बन गए।

वर्तमान समय में जब विविध विभाजनकारी शक्तियाँ जन–मानस को वर्ग और जाति के आधार पर बांटने का प्रयास कर रही हैं, तब पूज्य संत श्री रविदास जी के जीवन–संदेश के मर्म को समझकर हम सभी को देश और समाज की एकात्मता के लिए कार्य करने का संकल्प लेने की आवश्यकता है।''

(मा. सरकार्यवाह जी के वक्तव्य का अंश)

कोशी का काशी

–संजीव कुमार

कई विशेषताओं से सम्पन्न है सहरसा का बनगांव । एक गांव से सामान्य व्यक्ति को जो भी अपेक्षा होती है, वह सब इस गांव में है। आपसी सौहार्द है, बौद्धिक संपन्नता है और गत 132 वर्षों से लगातार यहां धर्म सभा आयोजित हो रही है। लोगों का मानना है कि प्रख्यात संत लक्ष्मीनाथ गोसाई की कृपा इस गांव पर है। उनके प्रभाव के कारण ही आज इस बड़े गांव में कई आईएएस, आईपीएस एवं प्रशासनिक अधिकारी तथा डॉक्टर और इंजीनियर हैं। इसके अलावा दिलखुश जैसे कई कर्मठ उद्यमी हैं। यहां की होली देखने दूर–दराज से लोग आते हैं। दो दिनों तक होली की धूम रहती है और लोग वापस अपने–अपने गंतव्य को चले जाते हैं। इन सभी गतिविधियों का केंद्र बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाई का कुटीर होता है।

जब संघ लोक सेवा परीक्षा की बात आती है तो बिहार में सर्वप्रथम इस गांव का नाम लिया जाता है। यहां के होनहार बच्चे इतनी लगन से मेहनत करते हैं कि सफलता उनके कदमों को चूमती है। इस गांव के लोगों ने अपना ऐसा झंडा ऊंचा किया है कि इसे लोग आईएएस–आईपीएस वाला गांव कहने लगे हैं। सहरसा जिला के इस गांव के एक साथ 17–18 आईएएस–आईपीएस अधिकारी देश के विभिन्न हिस्सों कार्यरत हैं। लोगों का कहना है कि इस मिट्टी में वह जूनून है कि बच्चे कुछ भी करने के लिए प्रेरित रहते हैं।

स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक शिक्षा की लौ गांव में जली। गांव के ही एक युवा थे लक्ष्मेश्वर झा। इन्होंने 1922 में अंग्रेजी में एमए किया। 1928 में पटना यूनिवर्सिटी से लॉ भी किया। वे शिक्षा के प्रति समर्पित थे। अपना कैरियर हेडमास्टर से शुरु किए थे। फारबिसगंज, कुर्सेला में पदस्थापित रहे। उनकी इच्छा थी कि गांव में भी स्कूल खुले। इसके बाद गांव में 1939 में एक हाई स्कूल खोला गया। उस हाई स्कूल के कारण इस गांव में शिक्षा ने बहुत जोड़ पकड़ा। उस समय यहां लोग दूर–दूर से पढ़ने आते थे।

बनगांव के रहने वाले प्रथम आईएएस अधिकारी उदय शंकर झा उर्फ नारायण झा ने

बताया कि उन्होंने 1965 में मैट्रिक किया और पटना साइंस कॉलेज से फिजिक्स में एम.एससी. किया। साथ ही साइंस कॉलेज में एक साल लेक्चरर भी रहे। 1974 में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास की। इसी प्रकार अशोक झा इनकम टैक्स में चले गए। 1985 में रंजन खां का चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा के पदाधिकारी के रूप में हुआ। फिर 1991 में डॉ. सरोज झा भी अधिकारी बनें। यह क्रम चलता रहा। आलोक ठाकुर, राकेश मिश्रा आईपीएस अधिकारी बने। इस तरह से सिलसिला चलता रहा। इसके बाद हर साल आईएएस–आईपीएस या विभिन्न ट्रेंड में लोग आते रहे।

बनगांव का इतिहास

बनगांव का लिखित इतिहास काफी पुराना है। ऐसी धारणा है की बुद्ध के समय मे इस जगह का नाम आपन निगम था। ज्ञान की खोज और आध्यात्म के विस्तार के सिलसिले में गौतम बुद्ध यहां आये थे। पडोसी गाँव महिषी के मंडन मिश्र और कन्दाहा के प्रसिद्ध सूर्यमंदिर की वजह से यह गांव और आसपास के क्षेत्र सदियों से ज्ञान, धर्म और दर्शन के केंद्र रहे हैं।

इस गांव का नाम बनगांव होने के बारे मे भी कई किवंदतियां हैं। कहा जाता है गांव के सबसे पहले बाशिंदों में से एक का नाम बनमाली खां था। और उन्हीं के नाम से शायद इस गांव की पहचान बनगांव के रूप मे हुई। कुछ लोगों के अनुसार वनों से आच्छादित रहने के कारण इस गांव का नाम बनगांव पड़ा।

यह गांव बहुत बड़ा है। इस गांव में दो पंचायतें हैं, दस हजार वोटर हैं, गांव की आबादी करीब पच्चीस से तीस हजार है। यह गांव मूलतः पांच टोले में है। जिसमें पुरवारि टोल, रामपुर बंगला, सनोखरि बंगला, ठाकुर पट्टी, दक्षिणवारि टोल तथा पछवारि टोल थे। परंतु वर्तमान समय में ये सभी टोले विभिन्न उपटोलों में बंट गए हैं।

अन्य क्षेत्र में भी गांव के लोगों ने अपना झंडा बुलंद किया

ऐसा नहीं कि इस गांव के लोगों ने सिर्फ प्रशासनिक क्षेत्र में ही नाम कमाया है बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी अपना नाम रोशन किया है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि विश्व बैंक के अधिकारी के रूप में भी इस गांव के सदस्य काम कर चुके हैं। मेडिकल और व्यवसायिक क्षेत्र में भी अपना झंडा फहराया है। रोडवेज के दिलखुश कुमार इसी गांव के हैं।

लक्ष्मीनाथ गोंसाई की तपोभूमि

इस गांव की सबसे बड़ी विशेषता बाबा लक्ष्मीनाथ गोंसाई की कुटीर है। वे जबसे यहां रहने लगे, तबसे इस गांव का भला होने लगा। उनकी प्रेरणा से यहां समाज सुधार का काम शुरू हुआ। यहां बबुआ खां ने धर्म सभा की परंपरा चलाई। उसके बाद यहां शिक्षा पर काफी जोड़ दिया गया। जिसका परिणाम अब दिखता है।

इस गांव के अधिकतर लोग राज्य, देश सहित विदेश में उच्च शिक्षा में कार्यरत हैं. शिक्षा के क्षेत्र में शिखर पर परचम लहराने वाले इस गांव में विगत 135 वर्षों से कोई बड़ी घटना नहीं घटी है। विद्वता और धर्म शास्त्र पर अनवरत चर्चा के कारण इस गांव को लोग कोसी का काशी कहते हैं।

क्या है धर्मसभा की कहानी?

इस धर्मसभा की कहानी की बात करें, तो 135 वर्ष पूर्व 1891 ई. में इस सर्वोपकार सनातन धर्मसभा की स्थापना की गई थी। उसके पीछे प्रेरणा मिथिलांचल के एक प्रसिद्ध संत कवि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी जी की थी। इसी गांव के एक सपूत जिन्हें संत बबुआ खां के नाम से जाना जाता है, उन्होंने ही उनके प्रेरणा में आकर इसकी स्थापना की थी। इसका उद्देश्य था कि धर्म, नीति,और आचार की शिक्षा धर्म ग्रंथो के आधार पर लोगों को दी जाए ताकि समाज में सामाजिक समरसता के संग आपसी भेदभाव मिटाया जा सके और लोग अपनी भौतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए उन सब मार्गों का अवलोकन कर आगे बढ़ सकें।

इस सभा में एक ब्यास जरूर होते हैं, जो संत लक्ष्मीनाथ गोसाई को सभापति मानते हुए धर्मसभा की कार्रवाई शुरू करते हैं। उप सभापति के रूप में

संत बबुआ खां (जिन्होंने इस धर्मसभा की स्थापना की थी) उस परिवार के कोई न कोई एक वंशज जरूर होते हैं।

धर्मसभा में बैठे ब्यास जी के अनुसार यहां आसपास के जितने भी विद्वान हैं, इस धर्मसभा में उन लोगों का जमावड़ा होता है। यहां मुख्य रूप से धर्म की चर्चा और व्याख्या होती है। उसमें चारों वेद, 18 पुराण, आठों धर्मशास्त्र, उपनिषद इन सब पर चर्चा होती है. इलाके के जितने भी संस्कृत के विद्वान हैं, वे सभी इसमें आते है और धर्मसभा में भाग लेकर अपना अपना व्याख्यान देते हैं। वे कहते हैं, "सबसे बड़ी विशेषता है कि इस गांव में अब तक कोई बड़ी घटना नहीं घटी। आपस में बैठकर धर्म से युक्त जो भी बात है, या धर्मपूर्वक न्यायपूर्ण बैठकर समाधान कर लेते हैं। यहां शासन प्रशासन की कोई विशेष जरूरत नहीं पड़ती है।"

हर साल इसका वार्षिकोत्सव मनाया जाता है जिसमें यह निर्णय लिया जाता है कि इस साल इस धर्मसभा के ब्यास कौन होंगे। निर्णय के उपरांत या तो पूर्व वाले ही ब्यास रहते हैं या फिर उसे बदलकर धर्मसभा की कार्रवाई आगे बढ़ाई जाती है।

इस धर्मसभा को स्थापित करने वाले संत बबुआ खां के वंशज और इस धर्मसभा के उपसभापति पीतांबर खां की मानें तो प्रत्येक रविवार को इस धर्मसभा में होने वाली कार्रवाई को एक सफेद पन्ने में लाल स्याही से लिखा जाता है। इसमें ब्यास जी का नाम और धर्मसभा में प्रसाद चढ़ानेवाले व्यक्ति का नाम लिखा जाता है। इसमें आज भी गत 135 वर्षों का रिकॉर्ड सुरक्षित है।

ग्रामीण पंडित सत्यनारायण झा इसे परमहंस की धर्मसभा मानते हैं। ऋषि, गंधर्व, यक्ष सब का समावेश इस सर्वोपकारणी सनातन धर्मसभा में हैं। ग्रामीणों की मान्यता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी रूप धारण करके शामिल होते हैं। इसमें हर किसी के बैठने का आसन अलग होता है।

परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं

प्रातःस्मरणीय परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं (1787–1872) मिथिला क्षेत्र के एक भारतीय योगी और कवि थे। आपका जन्म जिला सुपौल के परसरमा गाँव में विक्रम संवत् 1850 (1793 ईव) में हुआ था। थोड़े बड़े होने पर आपने घर से अन्यत्र रहुआ गाँव के एक पीपल वृक्ष के नीचे अपना साधना स्थान चुना। वर्षों की कठिन तपस्या से अभिलाषित दक्षता प्राप्त कर परिब्राजक के रूप में प्रसिद्ध स्थानों में घूमने लगे। इसी क्रम में आप बनगांव पधारे। उस समय आप संन्यास ग्रहण कर शिखा सूत्र को तिलांजलि दे चुके थे। आपके ऊर्जस्वी व्यक्तित्व तथा गठित स्वास्थ्य देखकर सभी ने हर्षपूर्वक बनगाँव में आपका स्वागत किया।

उस समय बनगाँव में दूध–दही का बाहुल्य था। आपके लिये ग्रामीणो ने ठाकुरवाड़ी के प्रांगण में एक पूर्ण कुटी बनवा दी थी। ज्यादातर समय आप बनगाँव में ही रहते थे क्योंकि यहाँ के लोग बहुत सीधे–साधे और साधु–महात्माओं को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। दिन भर आप उनलोगों के साथ रहते थे और रात में योगाभ्यास किया करते थे।

बनगाँव में ही आपको श्विभूतिपादश की रश्मि विकसित हुई। अनुमानतः 1819 ईव से आपने ब्रजभाषा और मैथिली में कविता लिखना प्रारम्भ किया। अधिकतर आप दोहा, चौपाई, और गीत लिखा करते थे। आपके समकालीन कवि श्री छत्रनाथ झा, मिस्टर जॉन और रामरूप दास थे। आपने भगवान के मंदिर के साथ–साथ अपनी कुटिया भी स्थापित की। जिसमें बनगाँव, परसरमा, फैटिकी, लखनौर एवं शक्रपुरा आदि स्थानों की कुटियाँ अधिक प्रसिद्ध हैं। जमीन्दारी समाप्ति के पूर्व तक, इन कुटियों का भरण–पोषण शक्रपुरा राज्य से होता था। आपने अनेक स्थानों में पोखरों, कुओं और फुलवारियों की भी सृष्टि की।

लोग आपकी अद्‌भुत योग शक्ति का प्रभाव देख कर आपको योगी विशेष का अवतार समझने लगे। लोग आपकी अमोघ वाणी से लाभ उठाने लगे। आप यथासाध्य सबका दुःख दूर किया करते थे।

शुद्ध शीर्षक

रवींद्र कुमार

1. दलों के निजी स्वार्थ को लेकर महागठबंधन में दरार

इस शीर्षक के 'निजी' और 'स्वार्थ' शब्द विचारणीय हैं। निजी का अर्थ निज का, अपना, किसी एक व्यक्ति या वर्ग से संबंध रखने वाला, व्यक्तिगत आदि है। इसका अंग्रेजी पर्याय पर्सनल और प्राइवेट है। स्वार्थ 'स्व' में अर्थ मिलने से बना है। 'स्व' का अर्थ भी अपना, निज का आदि है; जैसे– स्वजाति यानी अपनी जाति का, स्वदेश यानी अपना देश, स्वजन यानी अपने परिवार के लोग। स्वार्थ का अर्थ है अपना अर्थ, लाभ या हित, अपनी भलाई आदि। इस प्रकार इन दोनों के अर्थ से स्पष्ट है कि निजी के साथ स्वार्थ का प्रयोग उचित नहीं है, क्योंकि स्वार्थ का 'स्व' 'निजी' का पर्यायवाची शब्द है। ऐसी स्थिति में इन दोनों का एक साथ प्रयोग करने से पुनरुक्ति दोष आ जाता है। अतः इस दोष से बचने के लिए इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाना चाहिए–

महागठबंधन में दलों के स्वार्थ को लेकर दरार

अथवा

दलों के निजी हित को लेकर महागठबंधन में दरार

---

2. पेशकार ने वकील को पेन फेंककर मार दी

इस शीर्षक के लिंग का प्रयोग विचारणीय है। इसमें कई क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। नियमतः सकर्मक या अकर्मक क्रियाओं के बाद 'डाल' या 'दे' धातु (डालना या देना क्रिया) आने पर 'ने' विभक्ति का प्रयोग होता है। अतः शीर्षक में 'ने' चिह्न का प्रयोग सही है। व्याकरण के नियमानुसार यदि कर्ता का 'ने' और कर्म का 'को' चिह्न प्रयुक्त हो, तो क्रिया सदैव एकवचन, पुलिंग और अन्य पुरुष में होती है; जैसे– लड़कियों ने रोटियों को खाया। इस वाक्य में कर्ता लड़कियों और कर्म रोटियों के बहुवचन और 'स्त्रीलिंग रहने के बावजूद इनका क्रिया पर प्रभाव नहीं पड़ने के कारण क्रिया 'खाया' पुलिंग और एकवचन है।

अब प्रश्न है कि शीर्षक की अंतिम क्रिया 'देना' का लिंग क्या हो? शीर्षक का कर्ता पेशकार और कर्म वकील, दोनों पुलिंग हैं। ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि ये दोनों स्त्रीलिंग भी होते, तब भी 'ने' और 'को' के प्रयोग के कारण क्रिया पुलिंग होती। लेकिन, इस शीर्षक का 'देना' क्रिया द्विकर्मक है, क्योंकि इसमें 'वकील' और 'पेन' दो कर्मों का प्रयोग है। दूसरे कर्म 'पेन' के साथ विभक्ति चिह्न नहीं है। अतः क्रिया इसी के अनुसार होगी। 'पेन' के निर्जीव होने से अंग्रेजी में इसका कोई लिंग नहीं है। लेकिन, हिंदी में राजकमल प्रकाशन और डॉक्टर हरदेव बाहरी के शब्दकोशों में इसे पुलिंग लिखा गया है। अतः शीर्षक की क्रिया पुलिंग होगी और तब इसका रूप यह होगा–

पेशकार ने वकील को पेन फेंककर मार दिया

---

3. शादी की नियत से युवती अपहृत

इस शीर्षक के समाचार में बताया गया है कि एक युवक ने एक युवती से शादी करने के लिए उसका अपहरण कर लिया। इस दृष्टि से इस शीर्षक का 'नियत' शब्द विचारणीय है। यह संस्कृत से आया हुआ विशेषण है, जिसका अर्थ नियमतः, पाबंद, निश्चित, मुकर्रर आदि है। उदाहरणार्थ नियत तिथि का अर्थ वह तिथि है, जो किसी काम को करने के लिए निश्चित की गई हो। इससे स्पष्ट है कि इस शब्द से इस शीर्षक का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा, क्योंकि युवती का अपहरण किसी उद्देश्य से किया गया है। दरअसल, उद्देश्य के लिए अरबी का 'नीयत' शब्द है, जो संज्ञा है और स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती है। उद्देश्य के अतिरिक्त यह इच्छा, मंशा, इरादा, आशय आदि के लिए भी प्रयुक्त होती है। इससे स्पष्ट है कि शीर्षक में संस्कृत के 'नियत' का नहीं, बलिक अरबी की 'नीयत' का प्रयोग होना चाहिए था। 'नियत' का स्त्रीलिंग में प्रयोग भी गलत है, क्योंकि विशेषण होने के कारण इसका कोई लिंग नहीं है। लगता है, स्त्रीलिंग 'नीयत' के भ्रम में इस 'नियत' का प्रयोग कर दिया गया है। अतः इस शीर्षक का शुद्ध रूप होगा–

शादी की नीयत से युवती अपहृत

दि केरल स्टोरी 2: हिंदू बेटियों की व्यथा-कथा

—प्रशांत रंजन

दि केरल स्टोरी2 अपने शीर्षक के अनुरूप लव जिहाद की उसी बात को आगे बढ़ाती है, जिसे तीन साल पहले दि केरल स्टोरी में सुदीप्तो सेन ने शुरू की थी। इस बार एक के स्थान पर तीन अलग कहानियों के माध्यम से यह अपनी बात कहती है। ये तीनों प्रेम कहानियां है, जिनमें एक ही समानता है कि लड़के मुसमान हैं और लड़कियां हिंदू। यही एक समानता पूरी फिल्म की जमीन तैयार करती है।

इन प्रेम कहानियों की शुरुआत मासूमियत से होती है, जैसा कि सभ्यता के पतन पर आधारित सभी नैतिक कहानियों में होता है। जोधपुर में एक लड़की नाच रही है और एक आदमी उसकी तारीफ करते हुए वीडियो बना रहा है। वह उसे शादी का प्रस्ताव देता है। वह उसके धर्म को पुरानी देवी–देवता पूजा बताकर उसकी आलोचना करता है। वह एक्साइटिंग वीडियो के जरिए धन–दौलत का वादा करता है। इन्फ्लुएंसर लड़की अपने माता–पिता से कहती है, "मेरे फोन को मत छुओ। यह मेरी निजता है। यह मेरा करियर है।" कोच्चि में एक शादीशुदा आदमी अपनी प्रेमिका को भरोसा दिलाता है कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे देगा और वह "धर्म परिवर्तन जैसी बातों में विश्वास नहीं करता।" जबलपुर में एक मुसलमान युवक हिंदू होने का नाटक करता है, और उस हिंदू युवती के साथ खड़े होने का वादा करता है जो भाला फेंक खेल में भारत का प्रतिनिधित्व करना चाहती है।

फिर सच्चाई सामने आती है कि हर एक मुस्लिम पुरुष पात्र एक सोची–समझी साजिश का हिस्सा है। यह फिल्म अपने पूरे कथानक में कभी डिप्लोमैटिक नहीं होना चाहती और इसलिए एक भी किरदार 'सच्चा मुसलमान' वाला रखने में विश्वास नहीं करती है। एक भी ऐसा मुस्लिम किरदार नहीं दिखाती जिसमें कोई हिचक, कोई पेचीदगी या कोई इंसानियत हो। फिल्म मोटे और ठेठ ढंग से एक ऐसी दुनिया के बारे में बताती है जहाँ हर मुस्लिम–चाहे वह मर्द हो, औरत हो या बुजुर्ग–एक ऐसी खतरनाक साजिश का पुर्जा है जो उन महत्वाकांक्षी, बेबाक हिंदू लड़कियों को निशाना बनाती है, और उन पिताओं को भी, जिन्होंने उन पर भरोसा करने की हिम्मत की।

उनमें से एक युवक एक कार्यालयनुमा स्थान पर मिशनरत दिखाई देता है। कार्यालय की दीवार पर 'गजवा–ए–हिंद 2047' के बैनर चस्पा हैं। नक्शे हैं। रणनीति पर चर्चा है। बिना कोई भाव दिखाए बोले गए संवादः 'हम एक भी कुंवारी हिंदू लड़की को नहीं छोड़ेंगे।' '2047 तक भारत में शरिया लागू हो जाएगा।' 'हम यूरोप की जनसांख्यिकी बदल रहे हैं।' वहाँ रेट कार्ड भी हैं। एक दलित महिला के लिए छह लाख। एक ब्राह्मण के लिए बारह लाख। यानी संकेतों के माध्यम से भी फिल्म कई जगह बात कहती है।

हिंदू लड़कियों को पीटा जाता है, बलात्कार किया जाता है, कैद किया जाता है, जबरन गोमांस खिलाया जाता है, बांधा जाता है, वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है और यहां तक कि मार भी डाला जाता है। इस दुनिया में मुस्लिम महिलाएं मूकदर्शक नहीं हैं। वे उत्साहपूर्वक इसमें शामिल हैं। वे यातना पर मुस्कुराती हैं। वे संगठित रूप से बुर्का पहनकर भागने के रास्ते रोक देती हैं। कोई रिश्तेदार नहीं है जो विरोध करे। कोई पड़ोसी नहीं है जो सतर्क रहे। बस एक सुनियोजित, योजनाबद्ध क्रूरता है।

इस बीच माता–पिता बेबस होकर हाथ–पैर मारते हैं। वे पुलिस के पास जाते हैं वकीलों के पास। वे अपनी बेटी के नाबालिग होने का सबूत देने वाले डॉक्यूमेंट दिखाते हैं। जवाब? "कानून, यानी धर्म बदलने का संवैधानिक अधिकार, उनके साथ है।" लगता है, डेमोक्रेसी भी इस साजिश में शामिल है। दूसरे हिंदुओं को इकट्ठा करने की कोशिशें पहले तो नाकाम हो जाती हैं। "हिंदू हजार साल से बंटे हुए हैं," मतलब– एकता की बहुत जरूरत है। मुसलमानों के खिलाफ एकजुट हों।

तीन वर्ष पूर्व जब दि केरल स्टोरी आई थी, तो मुट्ठीभर वामपंथी गिरोह के लोगों ने उसे प्रोपैगैंडा कहकर कॉर्नर करना चाहा था, लेकिन निर्देशक सुदीप्तो सेन व निर्माता विपुल शाह ने ताल ठोककर न केवल साक्ष्य प्रस्तुत किए थे, बल्कि वितंडा कर रहे लोगों को फिल्म के खिलाफ अदालत में जाने की चुनौती दी थी। ऊपर से मात्र 15 करोड़ रुपए में बनी उस फिल्म ने 20 गुना अधिक कमाई कर निर्माता–निर्देशक के विश्वास को पुष्ट किया था, साथ ही साथ विरोधियों को करारा जवाब भी मिल गया था। अब इसके सीक्वल यानी 'दि केरल स्टोरी2' में भी लगभग यही पैटर्न देखने को मिला। बल्कि रिलीज के पहले इस फिल्म को अदालती चक्कर भी काटने पड़े। सीक्वल में निर्माता विपुल शाह ने निर्देशन का दायित्व कामख्या नारायण सिंह को दिया।

इस सीक्वल को पहली फिल्म से ज्यादा व्यापक बनाने का प्रयास हुआ। इसलिए तीन भिन्न पात्रों की स्वतंत्र कहानियां रखी गईं और तीनों में लव जिहाद को वैचारिक नरेटिव के धागे में पिरोया गया। लेकिन, दुर्भाग्य से बड़ा बनाने के प्रयास मे फिल्म मे बौनी बनकर रखी गई। वैचारिक नरेटिव का यह धागा एक मनका बनाने के बजाय त्रिकोण बना गई और एक सामुच्य के रूप में फिल्म बिखर गई। तीनों पात्रों के हर चरण को तीन बार दिखाने से एक पर्दे पर एकरसता उत्पन्न होती है। इससे पटकथा में कसावट कम हो गई। पहले भाग में सुदीप्तो सेन ने एक ही कथा को पूरी फिल्म का अभिकेंद्र बनाए रखा था और इसी कारण तमाम विरोध के बावजूद फिल्म ने 300 करोड़ रुपए पीट लिए था। नवेले निर्देशक कामख्या नारायण सिंह इस मामले में चूक गए। इसका बैकग्राउंड स्कोर ज्यादा दमदार है। डार्क मूड के लिए कलर टोन का उपयोग तार्किक है।

इसमें गुस्सा ज्यादा बेहतर ढंग से पेश किया गया है। बुलडोजर सिक्वेंस उस गुस्से का आदर्श है। दोनों ही फिल्मों में, इल्जाम चुपके से और फिर जोर–शोर से खुद हिंदू परिवारों पर ही डाल दिया जाता है। लड़कियां इसलिए जाल में फंस जाती हैं, क्योंकि उन्हें अपने धर्म की शिक्षा मजबूती से नहीं दी गई थी। क्योंकि उनके पिता बहुत ज्यादा खुले विचारों वाले थे। क्योंकि उनके घर परंपराओं से बहुत ज्यादा कटे हुए थे। हालांकि इन विसंगतियों के बावजूद फिल्म अपने तरीके से समाधान देती है, जब बुलडोजर अपनी जोरदार एंट्री करता है, मुस्लिम अपराधियों को पुलिस थानों में बेरहमी से पीटा जाता है। हिंदू समाज जाग उठा है, फिल्म ऐलान करती है। संगठित होइए। एकजुट होइए।

चैत्र मास की सावधानी, वर्ष भर की सुरक्षा

– दीपशिखा

भारतीय पंचांग में चैत्र मास से ही नए वर्ष की शुरुआत मानी जाती है। यह वह समय होता है जब सर्दी समाप्त होकर धीरे–धीरे गर्मी की शुरुआत होती है। आयुर्वेद के अनुसार यह ऋतु परिवर्तन का काल है, इसलिए इस समय शरीर की देखभाल विशेष रूप से आवश्यक होती है। यदि इस महीने में कुछ नियमों का पालन किया जाए तो पूरे वर्ष स्वास्थ्य अच्छा रह सकता है।

भोजन – सर्दियों में शरीर में कफ का संचय हो जाता है और चैत्र मास में यह पिघलने लगता है। इसलिए इस समय हल्का, सुपाच्य और सात्विक भोजन करना चाहिए। हरी सब्जियाँ, मूंग की दाल, जौ, सत्तू और मौसमी फल शरीर के लिए लाभकारी होते हैं। बहुत अधिक तला–भुना, भारी और मीठा भोजन कम करना चाहिए क्योंकि इससे कफ और आलस्य बढ़ सकता है। सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीना भी पाचन को सुधारता है।

चैत्र मास में नीम के कोमल पत्तों का सेवन आयुर्वेद में बहुत लाभकारी माना गया है। नीम शरीर को शुद्ध करता है और खून को साफ करने में मदद करता है। कई स्थानों पर लोग गुड़ और नीम की पत्तियाँ मिलाकर खाते हैं, जो शरीर को रोगों से बचाने में सहायक माना जाता है। इसी तरह त्रिफला, गिलोय और तुलसी जैसे औषधीय पौधों का सीमित प्रयोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकता है।

दिनचर्या – दिनचर्या पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह जल्दी उठकर हल्का व्यायाम, योग और प्राणायाम करने से शरीर में स्फूर्ति आती है। इस समय तेज धूप में अधिक देर रहने से बचना चाहिए क्योंकि मौसम धीरे–धीरे गर्म होने लगता है। दोपहर में अधिक भारी काम करने के बजाय शरीर को थोड़ा विश्राम देना अच्छा रहता है।

सफाई – त्वचा और शरीर की सफाई भी इस मौसम में महत्वपूर्ण होती है। रोज स्नान करना, हल्के और सूती कपड़े पहनना तथा शरीर को स्वच्छ रखना कई प्रकार के संक्रमणों से बचाता है। आयुर्वेद में सप्ताह में एक–दो बार सरसों या नारियल तेल से हल्की मालिश करने की भी सलाह दी जाती है, जिससे त्वचा और मांसपेशियाँ स्वस्थ रहती हैं।

पानी का सेवन भी संतुलित मात्रा में करना चाहिए। गर्मी की शुरुआत होने के कारण शरीर में पानी की कमी जल्दी हो सकती है। इसलिए दिन भर में पर्याप्त पानी पीना, साथ ही छाछ, नींबू पानी और बेल का शर्बत जैसे प्राकृतिक पेय लेना लाभदायक होता है।

मानसिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना उतना ही आवश्यक है। चैत्र मास को नवरात्र और आध्यात्मिक साधना का समय भी माना जाता है। इस समय ध्यान, पूजा और सकारात्मक सोच से मन को शांति मिलती है और तनाव कम होता है। मन प्रसन्न रहेगा तो शरीर भी स्वस्थ रहेगा।

अंत में यह कहा जा सकता है कि चैत्र मास प्रकृति के नए आरंभ का संकेत देता है। यदि इस समय हल्का भोजन, नियमित दिनचर्या, स्वच्छता और संतुलित जीवनशैली अपनाई जाए तो शरीर को नए मौसम के अनुकूल ढालना आसान हो जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि से यही छोटे–छोटे नियम पूरे वर्ष स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होते हैं।

गौवंश संरक्षण के लिए देशव्यापी अभियान

गौवंश संरक्षण के लिए 27 अप्रैल से पूरे देश में चरणबद्ध अभियान चलाया जाएगा। प्रथम चरण में 27 अप्रैल को देश के 5034 प्रखंडों पर प्रदर्शन किए जाएंगे। इसके बाद प्रखंड के 11 हजार लोगों का हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन भी सौंपा जाएगा। यह जानकारी पटना में आयोजित एक पत्रकार वार्ता में राजस्थान की संत साध्वी निष्ठा गोपाल ने दी।

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए साध्वी जी ने बताया कि महापुरुषों और विशेषज्ञों का मत है कि की सेवा, गो सुरक्षा और गो सम्मान को लेकर कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया तो 2036 तक भारत गोवंश रहित होकर विकृत हो जाएगा।

संपूर्ण भारत वर्ष में गौ हत्या को प्रतिबंधित करने के लिए एवं गौ माता के सेवा, सुरक्षा एवं सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए, गो माता के नेतृत्व में अभियान भारत भर के संतों और गो सेवकों द्वारा चलाया जा रहा है,जो पूर्णतया अहिंसक, शांतिपूर्ण एवं अनुरोध के साथ रहेगा ।

यह किसी भी राज्य सरकार अथवा केन्द्र सरकार के विरुद्ध नहीं है। सरकार से विनम्र प्रार्थना संविधान के दायरे में रहकर गोमाता के लिए वांछित ,सेवा–सुरक्षा व सम्मान के लिए उचित कानून बनाने के लिए है ।

अतः 27 अप्रेल 2026 को भारतवर्ष की प्रत्येक तहसीलपर गोमाता के सानिध्य में सभी सनातनी, गो भक्त हजारों की संख्या में तहसीलदार कार्यालय पहुंचकर संपूर्ण भारतवर्ष से गौ हत्या बंद करने के लिये एवं गौमाता जी को सम्मानजनक पद प्रदान करने के लिये माननीय प्रधानमंत्री, माननीय राष्ट्रपति ,माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय राज्यपाल जी के नाम प्रार्थना पत्र प्रदान किया जायेगा। किसी कारण से प्रथम चरण मे गो सेवा, गो सुरक्षा और गो सम्मान का कार्य सिद्ध नहीं होता है, तो 27 जुलाई, 2026 को जिला केंद्र पर द्वितीय प्रयास किया जाएगा, दूसरे चरण में भी कार्य सिद्धि नहीं हुई तो 27 अक्टूबर, 2026 को राज्य की राजधानी पर तृतीय प्रयास किया जाएगा। तीसरे चरण में भी गौ काज सिद्ध नहीं हुआ तो 27 फरवरी, 2027 से 6 माह के लिए दिल्ली में धरने के माध्यम से सरकार से प्रार्थना की जाएगी। 15 अगस्त, 2027 तक भी कार्य सिद्ध नहीं होने पर 16 अगस्त, 2027 से हजारों गौभक्तों और संतों के द्वारा कठोर तपस्या स्वरूप केवल मात्र गंगाजल पर ही रहकर 9 दिन का क्रमिक उपवास किया जाएगा। इससे भी कार्य सिद्धि नहीं होने पर संतों और गौ भक्तों द्वारा कार्य सिद्धि आमरण अनशन जायेगा। इस पूरी प्रक्रिया में कोई भी उपद्रव, किसी भी प्रकार की कोई भद्दी टिप्पणी, किसी भी संगठन, राजनीतिक दल अथवा सरकार के विरुद्ध उग्र प्रदर्शन नहीं किया जाएगा तथा किसी भी राष्ट्रीय अथवा निजी संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा।

वार्ता में महामंडलेश्वर ओंकार दास जी महाराज जी, महंत गजेंद्र दास जी, साध्वी भक्ति श्री जी, छात्र नेता खुशबू पाठक जी, शिव नारायणी सेना के अध्यक्ष लव कुमार जी, रोशन रौनक जी इत्यादि उपस्थित रहे।

सहरसा की अर्चना ने खड़ा किया खुद का उद्योग

अब महीने की है 1 लाख रुपए तक की कमाई

बिहार के सहरसा जिले में आर्थिक तंगी से जूझ रहे एक परिवार की जिंदगी में शमुख्यमंत्री उद्यमी योजनाश डूबते को तिनका सहारा बनी। अर्चना कुमारी का परिवार कल तक आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। आज अर्चना आत्मनिर्भर बन अपना कारोबार कर रही हैं। उन्होंने उद्यमी योजना का लाभ उठाकर न केवल अपना मैन्युफैक्चरिंग व्यवसाय शुरू किया, बल्कि आज अपने कारोबार की बदौलत आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल कर जिला में दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गई हैं।

सहरसा के संजीव कुमार की नौकरी जाने पर पत्नी अर्चना ने मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना से 8.5 लाख का लोन लेकर पेपर कप और प्लेट उद्योग शुरू किया। अब वे सफल उद्यमी हैं और तीन लोगों को रोजगार भी दे रहे हैं।

कहते हैं ना अगर मुश्किल वक्त में अगर जीवनसाथी का साथ मिल जाए तो हर मुश्किलें आसान हो जाती हैं। एक ऐसी ही प्रेरणादायक कहानी बिहार के सहरसा जिले से सामने आई है।

सहरसा के संजीव कुमार कामत एक निजी कंपनी में कार्य करते थे। एक दिन 2024 में उन्हें अचानक नौकरी से निकाल दिया गया। नौकरी नहीं होने की वजह से परिवार का खर्चा चलाना काफी कठिन था। कुछ महीने तो लोगों से कर्ज लेकर गुजारा किया लेकिन नौकरी नहीं होने की वजह से आर्थिक स्थिति और खराब होती गई। नौकरी के लिए कई जगह आवेदन भी किया। लेकिन हर जगह निराशा ही हाथ लगी। ऐसे मुश्किल हालात में उनकी पत्नी अर्चना कुमारी ने उनका साथ दिया। दोनों ने कसम खाई कि अब वे नौकरी नहीं बल्कि स्वयं का रोजगार स्थापित करेंगे।

इसके बाद पति–पत्नी दोनों के बीच एक बड़ी संकट आ पड़ी। वह थी समस्या पूंजी की। इसी बीच अर्चना को यह जानकारी मिली कि सरकार की तरफ से कई योजनाएं चल रही हैं, जिसके सहारे खुद का रोजगार स्थापित किया जा सकता है। एक दिन विज्ञापन में उनलोगों ने मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के बारे में पढ़ा। इनलोगों ने सोचा कि इस योजना के तहत आवेदन कर बिजनेस शुरू किया जा सकता है। संजीव ने पत्नी (अर्चना कुमारी) के नाम से आवेदन किया।

आवेदन करने के बाद उद्योग विभाग द्वारा उन्हें 8 लाख 50 हजार का ऋण प्रदान किया गया। यह ऋण पेपर कप और प्लेट निर्माण उद्योग के लिए दिया गया था। बाहर से दोनों ने बड़ी–बड़ी मशीनों को मंगवाया और घर पर ही उद्योग को चलाना शुरु कर दिया। मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना का लाभ मिलने के बाद कप और प्लेट का निर्माण शुरू हुआ। शुरुआती दौर में आसपास के इलाकों में इसकी बिक्री की गई। फिर धीरे–धीरे यह कारवां बढ़ता गया और अब दोनों एक सफल उद्यमी बन चुके हैं। यही नहीं अर्चना ने तीन लोगों को रोजगार पर भी रखा है।

महिला उद्यमी अर्चना बताती हैं कि मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। उन्होंने इस योजना से खुद का पेपर कप एंड प्लेट निर्माण का उद्योग शुरू किया है। उनका व्यवसाय सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। वह नियमित रूप से उत्पादन कर सहरसा के विभिन्न बाजारों में सप्लाई भी कर रही हैं। वर्तमान में महीने की आय लगभग 70 से 80 हजार तक की है।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/26-28

बिहार में होली की धूम

बनगाँव (सहरसा)

बनमंखी (पूर्णिया)

भागलपुर

धमौन (समस्तीपुर)

डाक टिकट

पता

पता- विश्व संवाद केंद्र, 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, 10 वां तल, फ्रेजर रोड, पटना-800 001